आर. एन. आई. नं. : RJHIN16694

पोस्टल रजि. नं.

।। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारम् ।।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

परिकल्पना एवं निर्देशन – प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 01 | अंक : 02 | बीकानेर, अक्टूबर, 2013 | मूल्य : 2 रूपये

उत्कृष्टता की ओर बढ़ते कदम...

प्रो.(डॉ.) कर्नल ए.के. गहलोत

माननीय मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत की अध्यक्षता में राजस्थान सरकार का एक प्रतिनिधि मंडल गत 28 अप्रेल 2013 को इज़राइल यात्रा पर कृषि और पशुपालन के क्षेत्र में सहयोग की संभावनाओं के लिए गया था। तेल अबीब में मैक्समिल्क द्वारा मुख्यमंत्री के समक्ष पशुपालन के क्षेत्र में वहां किए जा रहे वैज्ञानिक उपायों का प्रजेन्टेशन दिया गया। इसके आधार पर राज्य सरकार के निर्देश पर मुख्यमंत्री के सचिव ने राज्य में राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय को मुख्य कार्यकारी एजेन्सी मानते हुए प्रजेन्टेशन की प्रति कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को भिजवाते हुए विश्वविद्यालय को इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए कहा।

कुलपति का सन्देश

इज़राइली पशुपालन वैज्ञानिकों का एक दल 19 सितम्बर को राजस्थान की तीन दिवसीय यात्रा के पहले दो दिन वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर पहुँचा। इस दल में तेल अबीब के मेक्समिल्क लिमिटेड के डॉ. सार याविन, डॉ. आद्या अरोया और डॉ. नरेश रेड्डी शामिल थे। यह दल वेटरनरी विश्वविद्यालय में उपलब्ध सुविधाओं और क्षमताओं का आंकलन कर राज्य में "इन विट्रो फर्टिलाइजेशन" प्रयोगशाला स्थापित करने के लिए यहां पहुँचा। इज़राइली वैज्ञानिकों ने दो दिन बीकानेर में रह कर वेटरनरी विश्वविद्यालय में कई चरणों में विचार–विमर्श कर पशु अनुसंधान केन्द्रों, पशु प्रजनन केन्द्र और प्रयोगशालाओं का मौके पर जायजा लिया। इज़राइली वैज्ञानिकों ने विश्वविद्यालय के सभी संकाय सदस्यों और वैज्ञानिकों के समक्ष अपना प्रजेन्टेशन प्रस्तुत किया। उन्होनें पशुओं में विभिन्न चिकित्सा पद्वतियों से नस्ल सुधार, भ्रूण प्रत्यारोपण तथा अन्य वैज्ञानिक उपायों की जानकारी दी और वैज्ञानिकों से सीधा संवाद हुआ। सरकार की पहल पर इजराइल के साथ सार्वजनिक–निजी क्षेत्र में तकनीकी सहभागिता से राज्य में पशुधन उत्पादकता को बढ़ाने में मदद मिलेगी। भारत सरकार के स्तर पर भी उद्यानिकी, खजूर उत्पादन, वृक्षारोपण और अन्य कृषि क्षेत्रों में इज़राइल पद्धतियों के सकारात्मक परिणाम आए है। समान जलवायु परिस्थितियों के कारण इजराइल के साथ राजस्थान में पशुपालन और कृषि में सहयोग के अच्छे नतीजे मिलेगें।

देश का 12 फीसदी दुग्ध उत्पादन राजस्थान राज्य में होता है। यहां दुधारू पशुओं की गौवंश की श्रेष्ठ पांच नस्लों में से राठी गाय से 20–25 किलो दूध प्रतिदिन तक मिला है। नए सहयोग और तकनीकी आदान–प्रदान से पशुधन उत्पादों का व्यवसायिक और वाणिज्यिक उपयोग को बढ़ावा मिलेगा। राजुवास विडियो प्रोफाइल डाक्यूमेंट्री फिल्म का पहली बार प्रदर्शन कर इजराइली वैज्ञानिकों को विश्वविद्यालय के इतिहास, संसाधन, चिकित्सा, अनुसंधान, प्रसार और शैक्षणिक कार्यों की जानकारी दी गई। वैज्ञानिको ने डेयरी पशुओं में जेनेटिक सुधार कर दुग्ध उत्पादन बढ़ाने, पोषण और पशु स्वास्थ्य और प्रजनन तथा इन वेट्रो फर्टिलाईजेशन तकनीक सहित डेयरी फार्मिग प्रबंधन के क्षेत्र में अच्छे सहयोग के लिए भारत को सर्वाधिक उपयुक्त बताया। तीसरे दिन 21 सितम्बर को जयपुर में प्रमुख शासन सचिव (पशुपालन) कार्यालय में राज्य के पशुपालन अधिकारियों और वेटरनरी विश्वविद्यालय के साथ राज्य स्तरीय बैठक में वेटरनरी विश्वविद्यालय में "इन विट्रो फर्टिलाइजेशन" प्रयोगशाला की स्थापना के प्रस्ताव पर विचार – विमर्श किया गया। इजरायली वैज्ञानिकों के दल ने राजस्थान वेटरनरी विश्वविद्यालय में उपलब्ध संसाधनों, शैक्षणिक और अनुंसधान कार्य से प्रभावित होकर इसे उत्कृष्ट किस्म का बताया है। हम जीवटता के साथ इस ओर आगे बढ़ते रहेंगे।

(ए.के. गहलोत)

इन विट्रो फर्टिलाइजेशन प्रयोगशाला की स्थापना के लिए इजरायली वैज्ञानिकों का दौरा एवं पशुपालकों से संवाद

बीकानेर। इजराइली पशु वैज्ञानिकों ने कुलपति सचिवालय में जिले के प्रगतिशील पशुपालकों के एक समूह से सीधा संवाद किया। कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि श्रेष्ठतम देशी नस्ल की गायों से "इन वेट्रो फर्टिजाईजेशन" द्वारा भ्रूण तकनीक से बड़ी संख्या में श्रेष्ठतम क्षमता वाली बछड़िया प्राप्त होने से दुग्ध उत्पादन अधिक किया जा सकेगा। पशुपालकों का मानना था कि अधिक दुग्ध उत्पादन क्षमता वाली देशी नस्ल के गौवंश का लालन–पालन स्थानीय जलवायु के अनुकूल रहेगा। पशुपालक इस तकनीक से काफी प्रभावित हुए तथा उन्होने इसमे विशेष रुचि दिखाई। इस संवाद में जिले के 19 प्रगतिशील पशुपालक शामिल थे जिनमें तीन महिला पशुपालक थी।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

विश्वविद्यालय संगठन - एक नजर

कुलाधिपति

शासकीय परिषद् ↔ **कुलपति** ↔ शैक्षणिक परिषद्

कुल सचिव

वित्त नियंत्रक

संकाय अध्यक्ष

संगठक महाविद्यालय
- सीवीएएस, बीकानेर
- सीवीएएस, नवानियाँ वल्लभनगर

सम्बद्धता प्राप्त
- अपोलो पशु औषध महाविद्यालय, जयपुर
- महात्मा गांधी वेटरनरी कॉलेज, भरतपुर
- महात्मा ज्योतिबा फूले वेटरनरी कॉलेज, चौमू
- बी.एस. पशु औषध महाविद्यालय एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनूं
- अरावली वेटरनरी कॉलेज सीकर
- श्री गंगानगर वेटरनरी कॉलेज श्रीगंगानगर
- एम.बी. वेटरनरी कॉलेज डूंगरपुर

निदेशक अनुसंधान

अनुसंधान परिषद्

मुख्यालय अनुसंधान संस्थान
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर
- एपेक्स सेन्टर, बीकानेर
- संस्थानिक अनुसंधान, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

गैर मुख्यालय अनुसंधान संस्थान
- स्नातकोत्तर पशुचिकितसा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीछवाल, बीकानेर
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, कोडमदेसर बीकानेर
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर,हनुमानगढ़
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन,जैसलमेर
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र, वल्लभनगर, उदयपर

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रसार परिषद्
- बीकानेर
- जयपुर
- वल्लभनगर,उदयपुर

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र
- बाकलिया, नागौर
- कुम्हेर, भरतपुर
- सूरतगढ़, गंगानगर
- बोजुन्दा, चित्तौडगढ़
- डूंगरपुर
- मालपुरा (टोंक)
- झुंझुनूं
- सिरोही
- बांसवाड़ा
- कोटा

समन्वयक पशुपालन डिप्लोमा

डिप्लोमा संस्थान
- अलवर (3)
- बीकानेर (4)
- भरतपुर (3)
- चूरू (1)
- दौसा (2)
- डूंगरपुर (1)
- हनुमानगढ़ (3)
- जयपुर (11)
- जैसलमेर (1)
- झालावाड़ (1)
- झुंझुनूं (2)
- जोधपुर (6)
- करौली (2)
- कोटा (4)
- धौलपुर (1)
- नाथद्वारा (1)
- बाड़मेर (1)
- श्रीगंगानगर (2)
- सीकर (2)
- टोंक (1)
- उदयपुर (3)

निदेशक क्लिनिक

टीवीसीसी
- शल्य चिकित्सा एवं रेडियोलोजी
- पशु जनपादकीय एवं निवारक औषध विभाग
- पशुचिकित्सा औषध विभाग
- पशु मादा रोग एवं प्रसूति विभाग

अधिष्ठाता छात्र कल्याण
- रोजगार प्रकोष्ठ
- खेल-कूद
- राष्ट्रीय सेवा योजना
- एन सी सी
- छात्रावास अधिकारी

निदेशक, पी.एम.ई. | परीक्षा नियंत्रक | सुरक्षा अधिकारी | पूल अधिकारी | समन्वयक जनसम्पर्क प्रकोष्ठ | निदेशक स्नातकोत्तर | निदेशक कार्य भू-सम्पदा | पुस्तकालयाध्यक्ष केन्द्रीय पुस्तकालय

वेटरनरी शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्यशाला जयपुर में आयोजित

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर तथा राष्ट्रीय पशु चिकित्सा विज्ञान अकादमी द्वारा ''पशुपालन के क्षेत्र में मानव संसाधनों की जरूरत के लिए वेटरनरी शिक्षा विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय बागवानी नवाचार एवं प्रशिक्षण केन्द्र, दुर्गापुरा, जयपुर में किया गया। दो दिन की इस राष्ट्रीय कार्यशाला में देशभर के 5 वेटरनरी विश्वविद्यालयो के कुलपति एवं 32 वेटरनरी कॉलेजो के अधिष्ठाता शामिल हुए। कार्यशाला में भारत सरकार के पशुपालन, डेयरी व मत्स्य अधिकारी, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक, भारतीय पशु चिकित्सा परिषद के अध्यक्ष, राष्ट्रीय पशु चिकित्सा विज्ञान अकादमी की प्रशासकीय परिषद के सदस्यों सहित पशु आहार, खाद्य, दुग्ध, पोल्ट्री, मत्स्य, फार्मास्यूटिकल, दूरसंचार तकनीक उद्योगो के प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया। इन दो दिनों में पशुपालन के क्षेत्र में मानव संसाधनों की जरूरत के लिए वेटरनरी शिक्षा विषय पर गंभीर चर्चा के बाद कुछ सुझाव एवं सिफारिशे निकल कर आयी। वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि पशुचिकित्सा में मानव संसाधनों की कमी और क्षेत्रिय असंतुलन को दूर करके संसाधनो के प्रभावी प्रबन्धन की योजना बनाई गई। देश में प्रशिक्षित पशु चिकित्सको की कमी को देखते हुए पशु चिकित्सा के क्षेत्र मे निजी क्षेत्रो को बढ़ावा दिया जायेगा तथा सार्वजनिक निजी भागीदारी (पी.पी.पी.) एवं निजी क्षेत्रों के तहत नये महाविद्यालय खोले जाने चाहिए। पशु चिकित्सा के क्षेत्र में समन्वित पाठयक्रम प्रारंभ करने की जरूरत महसूस की गई। प्रो. गहलोत ने बताया कि कार्यशाला से प्राप्त निष्कर्षो को राष्ट्रीय पशु चिकित्सा विज्ञान अकादमी के माध्यम से केन्द्र सरकार को तथा राज्य के पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयो के माध्यम से राज्य सरकारो को प्रस्तुत किये जायेगे, ताकि सुझावो पर नीतिगत निर्णय क्रियान्वित किये जा सके।

कृषकों और पशुपालको के लिए पहली हिन्दी मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का लोकार्पण

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने विश्वविद्यालय द्वारा राज्य के कृषकों और पशुपालको के लिए पहली हिन्दी मासिक पत्रिका ''पशुपालन नए आयाम'' का लोकार्पण किया। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रतिमाह नियमित रूप से इसका प्रकाशन किया जाएगा। कुलपति प्रो. गहलोत ने इस अवसर पर कहा कि पत्रिका में पशुपालकों और कृषकों के लिए उपयोगी जानकारी के साथ वैज्ञानिक और तकनीकी कार्यो को ग्राम स्तर तक पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा। पत्रिका में विश्वविद्यालय की गतिविधियों, शोध कार्यो, पशुपालन से स्वरोजगार जैसे विषयों पर भी जानकारी दी गई है। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक और पत्रिका के प्रधान संपादक प्रो. सी.के. मुरड़िया, इजराईल के पशु वैज्ञानिकों सहित बड़ी संख्या में प्रगतिशील पशुपालक मौजूद थे।

छूत की बीमारी ''मुंहपका-खुरपका'' : कारण और निवारण

यह एक संक्रामक तथा छूत की बीमारी है जो विषाणु से होती है। इस बीमारी की शुरूआत में जानवर को तेज बुखार 104–106° F आता है। मुंह से लम्बी लार टपकती है, मुँह के अन्दर जीभ व तसुओं पर छाले हो जाते है। पाँवों में खुरों के बीच तथा थनों में भी छाले हो जाते है। रोगग्रसित वयस्क पशुओं में मृत्यु दर नहीं होती मगर पिछले कुछ वर्षो में देखा गया है कि मुंह खुर रोग के विषाणु तथा अन्य रोग जैसे गलघोंटू के जीवाणु मिलकर पशु को अधिक क्षति पहुँचाते है। जिससे मृत्युदर काफी बढ़ गई है। यह बीमारी पहले अधिकतर अक्टूबर से लेकर फरवरी माह के बीच अधिक होती थी। परन्तु आजकल इस बीमारी का प्रकोप साल भर ही रहता है। हाल ही में बीकानेर में इस बीमारी का प्रकोप पाया गया है।

कारण :-

यह रोग स्पथोविषाणु जो कि पिकोरना विषाणु समूह का सदस्य है, के द्वारा होता है। इस विषाणु के 7 प्रकार तथा अनेक उपप्रकार है। हमारे देश में मुँहपका खुरपका रोग मुख्यता ए, ओ, सी व एशिया द्वारा उत्पन्न होती है। अधिकांश रूप से ओ तथा ए प्रकार के विषाणु से होती है। समूह मे एक बार बीमारी आने के बाद सारे जानवर इस रोग से ग्रसित हो जाते है क्योंकि यह विषाणु हवा में शीघ्र उड़कर फैल जाता है। सामान्यतः इस रोग से ग्रसित वयस्क पशुओं में मृत्युदर 2 प्रतिशत तथा छोटे बच्चों में 20 प्रतिशत है। छोटे बछड़ों में कोई लक्षण नहीं आते हैं और तुरन्त मर जाते है।

फैलने का तरीका :-

इस रोग का संचरण या फैलाव वायु, भोजन, जल या रोगग्रस्त पशु के सीधे सम्पर्क से तथा पशुशाला मे काम करने वाले मनुष्यों द्वारा तथा काम में लेने वाले उपकरण तथा सामग्री द्वारा होता है। नम वातावरण, पशु की आंतरिक कमजोरी, पशुओं का आवागमन, लोगों का आवागमन बीमारी फैलाने में मदद करते है।

इस बीमारी का विषाणु मलमूत्र, गोबर, लार, नाक स्त्राव, दूध, सीमन सब में बाहर निकलता है। यह रोग गाय, भेड़, बकरी, भैस, सूअर इत्यादि में होता है। विदेशी नस्ल के पशु तथा संकर पशु इस रोग के प्रति अधिक संवेदनशील होते है तथा इनके लिए यह बहुत घातक रोग है। रोगग्रस्त पशु रोगवाहक भी होते है तथा 5–6 माह तक अपनी लार द्वारा रोग के विषाणु का प्रसार करते हैं।

लक्षण

सबसे पहले जानवर को तेज बुखार, सुस्ती, चारा खाना बंद कर देने के लक्षण दिखाई देते है और जुगाली कम कर देता है व मुंह की श्लेष्मा झिल्ली लाल हो जाती है। 2. रोगी पशुओं के मुँह से अधिक लार गिरती है तथा चपचपाहट की आवाज आती है। दाँत पिसता है। 3. रोगी पशुओं के मुँह में जीभ, मसूढ़ों, होठों, नथुनों में फफोले अर्थात् छाले हो जाते है। 4. पैरो में खुरो के बीच, कारोनरी पट्टी पर तथा थनों पर भी फफोले बन जाते है। 5. दुधारू पशुओं में दूध निकालते समय यह फफोले फूट जाते है और घाव बन जाते है। घाव द्वितीय संक्रमण के कारण मवाद पड़ जाता है तथा थनैला रोग भी हो जाता है। 6. पैरों में भी खुरों के बीच घाव बन जाते है तथा रोगी पशु लंगड़ाकर चलता है, पैर पटकता है। अगर हम रोगग्रस्त पशुओं की ध्यान पूर्वक चिकित्सा न करें तो खुर गिर जाते है और पशु घुटनो के बल चलता है। 7. फफोले (थूथन) पर, बाल नासा छिद्रों में भी हो जाते है तथा द्वितीय संक्रमण के कारण यह बीमारी और भी गंभीर हो जाती है तथा जानवर को निमोनिया भी हो जाता है। कभी – कभी यह फफोले पेट तथा आंतों में भी मिलते हैं। इससे जानवर को दस्त हो जाते है और दस्त में खून भी आता है। इस बीमारी के दौरान जानवर को रोग प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है तथा द्वितीय संक्रमण के कारण निमोनिया व थनैला रोग का प्रकोप बढ़ जाता है। यह रोग 10–15 दिनों तक रहता है। छोटे बछड़ों में इस बीमारी के प्रकोप से मुँह तथा खुर में छाले नहीं होते। इस विषाणु का प्रकोप सीधे हृदय पर होता है और छोटे जानवर मर जाते है। छोटे पशुओं का रक्त परीक्षण करने पर पता चलता है कि हृदय ''टाइगर हार्ट एपियरैन्स'' हो जाता है अर्थात् हृदय चौड़ा तथा लचीला हो जाता है हृदय की पेशियों में भूरी धारियॉ मिलती है।

इस बीमारी में पशु लम्बे समय (10–15 दिन) तक अस्वस्थ रहने के कारण उससे उत्पादन पर पड़ने वाले प्रभाव के कारण इस रोग का बहुत अधिक आर्थिक प्रभाव है। भारत में इस रोग का प्रकोप होने के कारण विदेशों में हमारे पशु तथा उत्पादनों पर रोक लगी होने से आर्थिक हानि होती है। छोटे बछड़ों की तुरन्त मृत्यु हो जाती है तथा ब्याही हुई गाय दूध देना कम कर देती है। थनैला रोग होने से कई बार थन बिल्कुल खराब हो जाते है। नर पशुओ मे बीमारी होने के बाद उनकी कार्य शक्ति में कमी आती है पशु कमजोर हो जाता है तथा अधिक देर तक काम नहीं कर सकता है। तावड़ा करने लगता है अर्थात् धूप में खड़े रहने की क्षमता बहुत ही कम हो जाती है तथा जानवरों का श्वास जल्दी फूलने लगता है। इस रोग के बाद पशुओं में शुरार की बीमारी हो जाती है।

उपचार

1. खुरपका – मुँहपका एक विषाणु जनित रोग है जिसका लक्षण के आधार पर इसका उपचार करते है। 2. बीमारी के शुरूआत में पशु के तापमान को नियंत्रित करने के लिए पशुचिकित्सक से परामर्श करके बुखार उतारने का टीका लगवाना चाहिए। 3. द्वितीय प्रकार के जीवाणुओं से संक्रमण को रोकने हेतु घावों को जीवाणुनाशक औषधियों द्वारा साफ किया जाना चाहिए। 4. मुँह के छाले पोटेशियम परमैगनेट (लाल दवा) 1 प्रतिशत घोल से धोने चाहिए तथा छालों पर बोरोग्लिसरीन 2 – 3 बार लगानी चाहिए। 5. पैरों के घाव को 1 प्रतिशत फिनायल से धोने चाहिए अगर खुर के बीच वाले घाव में कीड़े पड़ गये है तो तारपीन के तेल का फोआ या फिनायल का फोआ लगाकर घाव बन्द करने से कीड़े मर जाते है। कभी – कभी घाव इतने अधिक होते है कि खुर गिर जाते है तो प्रतिदिन घाव की सफाई कर लोरेक्सन मलहम की पट्टी करनी चाहिए। 6. द्वितीय संक्रमण को रोकने के लिए एन्टीबायोटिक भी पशुचिकित्सक के परामर्श कर लगवानी चाहिए। 7. अगर थनैला रोग तथा निमोनिया रोग हो गया है तो उसका इलाज करवाना चाहिए। 8. रोगकाल में रोगी पशुओं को कोमल तथा सरलता से पचने वाला भोजन देना चाहिए।...

शेष पेज 4 पर.....

पेज 3 का शेष..... मुँहपका-खुरपका

बीमारी को रोकने के उपाय

1. इस बीमारी में स्वस्थ पशुओं को बीमार पशुओं से अलग रखना चाहिए अर्थात् अलग बाड़े में रखना चाहिए क्योंकि यह बीमारी छूत की है और उड़कर फैल जाती है। उनके खिलाने–पिलाने की व्यवस्था भी अलग करनी चाहिए। उन्हे स्वस्थ पशुओं के साथ चारागाह में नहीं जाने देना चाहिए। पानी कुंड़ तथा तालाब से नहीं पिलाना चाहिए अन्यथा बीमारी फैलने की सम्भावना बढ़ जाती है। बीमार पशु के सहायक तथा पशु के उपयोग में लाये गये उपकरणों को स्वस्थ पशु के सम्पर्क में नहीं लाना चाहिए। यदि सम्भव न हो तो स्वस्थ पशुओं के पश्चात् ही उन्हे बीमार पशुओं के उपयोग में लाना चाहिए। रोगी पशुओं के उपयोग के पश्चात् सभी उपकरणों को जीवाणुरहित कर देना चाहिए। पशु सहायक को भी अपने हाथ एवं पांव ऐन्टिसेप्टिक घोल से धोकर कपड़ों को बदल देना चाहिए। अलग किये गये पशुओं को पूर्ण स्वस्थ होने के उपरान्त ही झुंड मे मिलाना चाहिए।

2. इस बीमारी को रोकने के लिए साल में एक बार टीका लगवाना चाहिए। ऑयल एडजुवेन्ट टिशु कल्चर वेक्सीन पशु चिकित्सक से परामर्श कर लगवानी चाहिए। गाय, भैंस, बछड़ा तथा सुअर में 2 मिली तथा भेड़, बकरी में 1 मिली गर्दन में चमड़ी के नीचे या मांसपेशियों में लगाए। पहला टीका जानवर में 4 महीने के उपर वाले सारे जानवर में लगाए तथा बूस्टर टीका 9 महीने बाद तथा फिर हर साल लगवाये। भारत में खुरपका–मुंहपका के टीके कई कम्पनियां बनाती है टीके के साथ विवरण (लीफलेट) आता है अतः उसको पढ़कर टीके की मात्रा सुनिश्चित करनी चाहिए। टीके के साथ फार्म तथा पशुओं की सफाई आवश्यक है। बाहर से फार्म पर पशुओं, आदमियों तथा गाड़ियों का आना बन्द कर दे। रोग को फैलने से रोकने के लिए जिस गांव, क्षेत्र में रोग हो उसके चारों तरफ के स्वस्थ पशुओं को टीका लगाकर प्रतिरक्षित क्षेत्र उत्पन्न कर देना चाहिए।

–प्रो. अन्जू चाहर –राजुवास

वेटरनरी छात्रावास का उद्घाटन

बीकानेर। प्रो. एके. गहलोत ने विश्वविद्यालय में नवनिर्मित बॉयज हास्टल का उद्घाटन किया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वित्त पोषित नए छात्रावास में 8 कमरों में 24 छात्रों को आवास सुविधा मिलेगी। छात्रावास में स्नातकोत्तर और शोध अध्ययनरत छात्र अपने परिवार के साथ भी रह सकेंगे। इसमें मैस और कामन रूम भी बनाये गये है। इस छात्रावास का शिलान्यास 6 नवम्बर 2012 को कुलाधिपति और राज्यपाल श्रीमती मार्ग्रेट अल्वा द्वारा किया गया।

छात्र / छात्राओं को लैपटॉप वितरित

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के 13 छात्र/छात्राओं को लैपटॉप प्रदान किए जिन्होने अलग–अलग विषयों की परीक्षाओं में प्रथम स्थान प्राप्त किया। शैक्षणिक उत्कृष्ट छात्र/छात्राओं को लैपटॉप मिलने से सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से और देश–दुनिया से जुड़कर अपने ज्ञान में अभिवृद्धि कर सकेंगे। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा सभी शैक्षणिक विभागों, पुस्तकालय और छात्रावासों को ई–गर्वनेन्स के तहत नेटवर्क की सुविधा प्रदान की गई हैं।

साइलेज तकनीक प्रदर्शन शिविर में किसानों ने सीखी साइलेज बनाने की तकनीक

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीकी केन्द्र द्वारा 13 सितम्बर को 10 जे.एम.डी., कानासर में प्रगतिशील पशुपालक श्री राजेन्द्र सिंह के खेत पर हरे चारे के संरक्षण के लिए साइलेज तकनीक प्रदर्शन शिविर का आयोजन किया गया। इस केन्द्र द्वारा हरे चारे के संरक्षण के लिए साइलोपिट के स्थान पर साइलो बैग का उपयोग किया गया। इस अवसर पर किसानों को सम्बोधित करते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने कहा कि भारत विश्व में सबसे अधिक दूध उत्पादन करने वाला देश है। हांलाकि मौजूदा चारा प्रबंधन उपायों के कारण भारत में पशुओं से मिलने वाला औसतन दूध उत्पादन बहुत कम है। अधिक

उत्पादन के लिये वर्ष भर हरा चारा होना आवश्यक है लेकिन यह संभव नहीं है क्योंकि अधिकांश चारा फसलें बरसात में बोयी जाती है। इस कमी को पूरा करने के लिये ऐसी चारा फसलें जिनमें वर्षा ऋतु में आवश्यकता से अधिक हरा चारा उपलब्ध होता है का उचित संरक्षण साइलेज के रुप में करके हरे चारे की आपूर्ति की जा सकती है। इस अवसर पर हरे चारे को संरक्षित करने की विधि कृषकों के सामने प्रदर्शित की गई। पशुपालकों ने ज्वार के हरे चारे की कुट्टी काटकर साइलो बैग में भरकर साइलेज बनाने की प्रक्रिया सीखी। प्रमुख अन्वेषक, प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, ने बताया कि साइलो बैग में साइलेज बनाने की पारम्परिक साइलो पिट या टावर पद्धति के मुकाबले कई फायदे है। इस विधि में साइलेज बनाने के लिए भूमि में गढ्ढे खोदकर साइलो बनाने की आवश्यकता नहीं होती है। इससे भूमि का बचाव होता है तथा साइलो के लिए पक्के निर्माण की आवश्यकता नही होती। कम लागत में तैयार साइलो बैग को एक से पांच क्विंटल तक भरा जा सकता है तथा भरे हुए साइलो बैग को परिवहन करने में भी आसानी होती है। यह लाभकारी तकनीक है तथा जब हरे चारे की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता हैं, उसे साइलेज विधि से संरक्षित कर उपयोग में लिया जा सकता है। 30–40 दिन में साइलेज खिलाने के लिए तैयार हो जाता है। इसे 3 से 6 माह तक सुरक्षित रखा जा सकता है। इस अवसर पर किसानों एवं पशु पालकों को हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा उत्पादित हरे चारे का भी प्रदर्शन किया गया। पशुपालकों ने हाइड्रोपोनिक्स मशीन द्वारा उत्पादित हरे चारे को सराहा तथा जानकारी प्राप्त की।

विश्वविद्यालय में स्नात्तकोत्तर शोध कार्य

कुक्कुट पालन को टिकाऊ एवं अधिक सस्ता कैसे बनायें

वर्तमान समय में कुक्कुट पालन एक उद्योग का रूप ग्रहण कर चुका है। यह 6.2 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रहा है। बढ़ती हुई खाद्य पदार्थो की कीमतें एवं घटते खाद्यान्न उपलब्धता ने इस वृद्धि पर कुछ हद तक अकुंश सा लगा दिया है। अतः पशु पोषण वैज्ञानिकों ने कुछ ऐसे अप्रचलित औद्योगिक उपउत्पाद, जो व्यर्थ उपयोग के है लेकिन उनका खाद्य–मूल्यांकन (पोषकता) उच्च है, का उपयोग करके इस कमी को आशिंक रूप से दूर किया है। राजूवास के जन्तु पोषण विभाग ने मँहगे व परम्परागत अनाज का प्रतिस्थापन सस्ते एवं अपरम्परागत जैसे बेकरी – वेस्ट द्वारा किया। इस सम्पूर्ण खाद्य को चूजों को खिलाने पर पाया गया कि ब्रॉयलर चूजों के आहार में बेकरी – वेस्ट को 30 प्रतिशत स्तर तक अकेले या एंजाइम मिलाकर दक्षता पूर्वक बिना किसी विपरीत प्रभाव के ब्रायलर चूजों के पालन के लिये उपयोग किया जा सकता है। इस प्रयोग के उपरांत यह पाया गया है कि ब्रायलर चूजों के लिये उपयोग किये गये सम्पूर्ण आहार की लागत को सम्पूर्ण खाद्य में बेकरी – वेस्ट के उपयोग से 5–19 प्रतिशत तक कम किया जा सकता है। शोध के लिए निर्देशन प्रो. आर. के. धूड़िया ने किया।

–शोधकर्ता – पारूल खण्डेलवाल

बकरी पालन में जड़ी – बूटी उत्पादों के मिश्रण का प्रभाव

भारत में दुनिया का अधिकतम पशुधन है। इस विशाल पशुधन के लिये चारे की बड़ी कमी रहती है। पश्चिमी राजस्थान में चारे की कमी विकराल समस्या का रूप ले लेती है। समय – समय पर वैज्ञानिकों एवं जन्तु पोषण विशेषज्ञों ने कुछ ऐसे प्राकृतिक पदार्थो की जड़ी–बूटियों के उत्पादों मिश्रण के बारे में बताया जिनको सम्पूर्ण चारे के साथ मिलाकर खिलाने पर खाद्य पदार्थो में उपस्थित पोषक तत्वों की उपयोजन क्षमता बढ़ जाती है।

इसी क्रम में राजुवास के पशुपोषण विभाग में किये गये एक प्रायोगिक शोध द्वारा पाया गया कि कुछ औषधीय पादपों के मिश्रण उत्पादों जैसे कि केटोन, डाइजेस्टोवेट को 10 मिलीग्राम प्रति ग्राम सम्पूर्ण आहार के साथ तथा रूमेक एवं शिल्पा बत्तीसा को क्रमशः 12.5 मिलीग्राम प्रति ग्राम एवं 7.5 मिलीग्राम प्रति ग्राम सम्पूर्ण आहार के साथ मिलाकर खिलाने पर न केवल बकरों का शरीर भार तुलनात्मक अधिक बढ़ता है वरन् सम्पूर्ण आहार में उपस्थित पोषक तत्वों की सुपाच्यता एवं उपयोजन दक्षता भी बढ़ती है तथा शरीर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव नहीं होता है।

–शोधकर्ता – अरविन्द कुमार जैन

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान – अक्टूबर 2013

पशु रोग	पशु प्रकार	क्षेत्र
मुँह खुरपका रोग (Foot & Mouth Disease)	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	बाँसवाड़ा, भरतपुर, दौसा, श्री गंगानगर, जयपुर, झुँझुनू, अनूपगढ़, धौलपुर, सवाई माधोपुर, अलवर
गलघोंटू (Haemorrhagic septicemia)	भैस, गाय	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई माधोपुर, दौसा टोंक, बून्दी, राजसमन्द, पाली, सीकर, श्रीगंगानगर, उदयपुर
ठप्पा रोग (Black Quarter)	भैंस	अनूपगढ़, जयपुर, बीकानेर
पी.पी.आर. (P.P.R.)	बकरी	सवाई माधोपुर
बोचूलिज्म (Botulism)	गाय	जैसलमेर, जोधपुर, फलौदी
चेचक (Pox)	बकरी	जयपुर, बीकानेर
सर्रा (Trypanosomosis)	ऊँट, भैंस,	अनूपगढ़, बाँसवाड़ा, धौलपुर, हनुमानगढ़, बून्दी
फड़किया रोग (Enterotoxaemia)	बकरी, भेड़	सवाई माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर
निमोनिया(Pneunmonic Pasteurellosis)	गाय	बीकानेर
गर्भपात (Enzootic Abortion in Ewes / Chlaimydophila Abortio n)	भेड़	बीकानेर, नागौर
रक्त प्रोटोजोआ (Theileriosis, Babesiosis)	भैंस, गाय	बाँसवाड़ा, बीकानेर, बून्दी, धौलपुर, हनुमानगढ़, अनूपगढ़, सवाई माधोपुर
गोल–कृमि (Round Worms)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर, सवाई माधोपुर
फीता–कृमि (Tape Worm s)	भैंस, बकरी, गाय	सीकर, धौलपुर
पर्ण–कृमि (Trematodes)	ऊँट, भैंस, गाय, भेड़, बकरी	डूंगरपुर, कोटा, राजसमन्द, बाँसवाड़ा, सवाई माधोपुर, भरतपुर, बून्दी, धौलपुर, अनूपगढ़, सूरतगढ़, सीकर
खुजली (Mange)	ऊँट	झुँझुनू, जैसलमेर, बाडमेर

इसके अतिरिक्त मुर्गियों में गमबोरो रोग, दीर्घ श्वसन रोग, कोक्सीडियासिस (खूनी दस्त) गोल एवं फीता–कृमि, कोराइजा, एविएन ल्यूकॉसिस काम्पलेक्स, कोलिबेसिलोसिस (सफेद दस्त) आदि रोगों की सम्भावना है। मुर्गी पालकों से निवेदन है कि इस संबंध में विस्तृत जानकारी विशेषज्ञों से प्राप्त कर लें। विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करे – डॉ. बी.के. बेनीवाल, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, डॉ. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग एवं डॉ. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास, बीकानेर । फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183

जल ही जीवन है।

गर्भावस्था में पशुओं की देखभाल कैसे करें

गर्भावस्था मे पशुओं की उचित देखभाल काफी महत्वपूर्ण होती है। गर्भावस्था में मादा पशुओं की अच्छी देखभाल करने से वे सही समय पर बिना किसी परेशानी के ब्यांती है और उनका दूध उत्पादन बढाने में भी काफी मदद मिलती है। पशुपालक मादा पशुओं से अधिक से अधिक दूध प्राप्त करना चाहते है। ऐसा गर्भावस्था के दौरान पशु को संतुलित व सही मात्रा में आहार उपलब्ध करवाकर किया जा सकता है। हालांकि उत्पादन पशुओं के पैतृक गुणों पर भी निर्भर करता है परन्तु उसके खाने पीने का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है। गर्भावस्था के दौरान हमेशा संतुलित आहार के साथ पीने के लिए स्वच्छ पानी प्रदान किया जाना चाहिए । ब्याने के कुछ सप्ताह पहले तथा बाद में उसे अच्छा तथा संतुलित आहार मिलना चाहिए। गर्भावस्था के दौरान गर्भ का विकास अंतिम 3 महीनों में सर्वाधिक होता है इसलिए गर्भावस्था के अंतिम 3 महीनों में बच्चे के संपूर्ण विकास के लिए उसकी मां को सभी जरूरी पोषक तत्व उचित अनुपात में मिलने चाहिए। गर्भावस्था के अंतिम 3–4 महीनों में पशु की बढती पोषक तत्वों की जरूरत को पूरा करने के लिए उन्हे दैनिक आहार के साथ अलग से हरा चारा तथा दाना भी खिलाना चाहिए। देशी गायों में 1.5 से 2.0 किग्रा, संकर गायें तथा भैंसे 2 से 3 किग्रा, भेड़ एवं बकरियां 300 से 500 ग्राम तक मात्रा में दिया जाना चाहिए।

मादा पशु के ब्याने के कम से कम दो महीने पहले उसका दूध निकालना बंद कर देना चाहिए जिससे वो पोषक तत्व जो दूध उत्पादन में खर्च हो रहे हो वे बछड़ें को मिल सके तथा उसका विकास हो। गायों व भैसों में दूध का निकालना, बंद करना काफी कठिन होता है। परन्तु उनके आहार को कम करके तथा कभी–कभी दूध निकालकर व दूध देने वाले अन्य पशुओ के झुण्ड से अलग रखकर उन्हे शुष्क अवस्था में लाया जा सकता है। पशुओ को ब्याने के बाद उनके दूध उत्पादन के अनुपात में संतुलित आहार के साथ हरा चारा भी खिलाना चाहिए। ग्याभिन पशुओ को रखने के लिए हवादार व प्रकाशयुक्त जगह का उपयोग करना चाहिए तथा उन्हे हमेशा विपरीत मौसमी परिस्थितियों से बचा कर रखना चाहिए। फर्श पर फिसले नहीं अतः अलग आवास में रखा जाना चाहिए।

ग्याभिन पशु को ब्याने के लगभग दो महीने पहले से ही पूरी तरह से आराम देकर ब्याने के पश्चात् अच्छा दूध प्राप्त करने के लिए मिनरल मिक्चर भी पर्याप्त मात्रा में खिलाया जाना चाहिए। हालांकि ग्याभिन पशुओ को खिलाते समय यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वे अधिक मोटी नहीं हो। इससे भूख प्रभावित होती है तथा उन्हे ब्याने में भी दिक्कत होती है। मादा के स्वास्थ्य तथा आहार का अच्छी तरह से ध्यान रखने से कम उम्र में ही ताव में आ जाती है व केवल दो या ढाई साल में ही बच्चा देने योग्य हो जाती है। गायों व भैसों में प्राकृतिक या कृत्रिम गर्भाधान करवाने के 21 दिनों बाद भी अगर वह दुबारा ताव में नही आती है तो यह समझा जाना चाहिए की पशु ग्याभिन है। मादा ग्याभिन है या नहीं इसका पूरी तरह से पता करने के लिए उनके शरीर के बाहरी लक्षणों को देखने के साथ ही उपयुक्त पशु चिकित्सक को दिखाकर जांच करवा लेनी चाहिए। पशु चिकित्सक से ग्याभिन पशु की जांच गर्भधारण के तीन महीनों के बाद कभी भी करवाई जा सकती है। ग्याभिन पशुओ को हमेशा खुले तथा नर्म स्थान पर बांधकर रखना चाहिए। और किसी भी तरह से डराना, भगाना या पीटना नही चाहिए। ग्याभिन को अधिक दूर तक चलाने व तेज दौड़ने से बचाना चाहिए व अन्य पशुओ के साथ लड़ने से रोकना चाहिए। गर्भवती मादा को कभी भी एसे पशुओ के साथ नही रखना चाहिए जिनका गर्भपात हो चुका हो। पशुओ के गर्भधारण करने के दिनांक को हमेशा याद रखना चाहिए ताकि उनके ब्याने के दिन का पता लगाया जा सके और सही तरह से देखभाल की जा सके। पशु जब ब्याने के नजदीक हो तो उसकी पूरी निगरानी रखनी चाहिए। पहली बार ग्याभिन हो तो अधिक देखभाल की जरूरत होती है। दूधग्रन्थी तथा थनों को ब्याने के 3–4 सप्ताह पहले अच्छी तरह से मसाज करना चाहिए इससे वे दूध उत्पादन के लिए पूरी तरह से तैयार हो सकेंगे। ब्याते समय पशु को अपने आप ब्याने देना चाहिए। यदि पशु को ब्याने में तकलीफ हो रही हो तथा बच्चे के सिर व टांगें बाहर दिखाई दे रही हो और पशु काफी समय से ब्याह नहीं रहा है तो, बच्चे को अन्दर हाथ डाले बिना ही खींचकर बाहर निकाला जा सकता है। यदि काफी जोर लगाने पर भी बच्चा बाहर नही आ रहा है तो ऐसी दशा में पशुचिकित्सक की सलाह लेना आवश्यक होता है। यदि पशु के ब्याते समय पशु, बच्चे की मटिन्डी फूटने के पश्चात् 3–4 घन्टे के अन्दर तक भी नहीं ब्याएं तो उसे योग्य पशुचिकित्सक को दिखाकर ब्याने का प्रबन्ध करवाना चाहिए। ब्याते समय पशु के साथ किसी तरह की छेड़छाड़ तथा उन्हे डराना या पीटना नही चाहिए। और ब्याने के सभी लक्षणों को अच्छी तरह से देखा जाना चाहिए जिससे उनके ब्याने के सही समय का अंदाजा लगाया जा सके। ब्याने के तुरन्त बाद पशु को गर्म पानी पिलाना चाहिए तथा आसानी से पचने वाला आहार देना चाहिए। नवजात बच्चे के पैदा होते ही उसके शरीर से झिल्ली हटा देनी चाहिए जिससे पशु बच्चे को चाटना आरम्भ कर सके।

ग्याभिन मादा ब्याने के बाद तीन से छः सप्ताह तक अपना वजन कम करती है अतः यह आवश्यक है कि ब्याने से पहले उसका पूरी तरह शारीरिक विकास होना चाहिए जिससे उसके स्वास्थ्य पर किसी भी तरह का विपरीत प्रभाव नही पडे और उसका दूध उत्पादन भी अधिक रहे। ब्याने के बाद पशु के बाहरी जननांगों को अच्छी तरह से गर्म पानी से साफ करना चाहिए जिसमें थोड़ी सी लालदवा या नीम का पानी मिला लेना चाहिए। जेर को सही समय पर निकालकर गहरे गढ्ढे में दबा देना चाहिए। ब्याने के बाद पशु को सबसे पहले अच्छी तरह का तरल तथा नमी युक्त आहार देना चाहिए पशुओं में ब्याने के तुरन्त बाद उनमें होने वाली बीमारियों खासकर मिल्क फीवर का पूरी तरह से उपचार करावें। इसके बचाव के लिए गर्भावस्था के दौरान अच्छी प्रकार का मिनरल मिक्सचर खिलाना चाहिए। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए कि गर्भावस्था के दौरान या ब्याने के तुरन्त बाद पशु को कोई बीमारी ना हो जिससे की उनका स्वास्थ्य प्रभावित ना हो तथा उसके गर्भ का पूरा विकास हो और ब्याने के बाद दूध भी अच्छा हो। पहली बार ब्याही हुई गाय या भैंस को दूध निकालते समय थोड़ी तकलीफ होती है अतः अगर पशु दूध नही दे तो उसे डराकर या पीटकर दूध नही निकालना चाहिए। अगर पशु को ब्याने के तुरन्त बाद थनैला रोग हो गया हो तो उनका दूध निकालकर उसके थनों को खाली रखना चाहिए तथा उस दूध को खाने के लिए प्रयोग में नहीं लेना चाहिए। पशुओ से अधिकतम दूध उत्पादन प्राप्त करने के लिए तथा डेयरी उद्योग की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि पशुओं के झुण्ड तथा गर्भवती पशुओं की पूरी देखभाल तथा प्रबन्ध किया जाना जरूरी है।

–डॉ. एस. सी. गोस्वामी, डॉ. उम्मेद सिंह
राजुवास

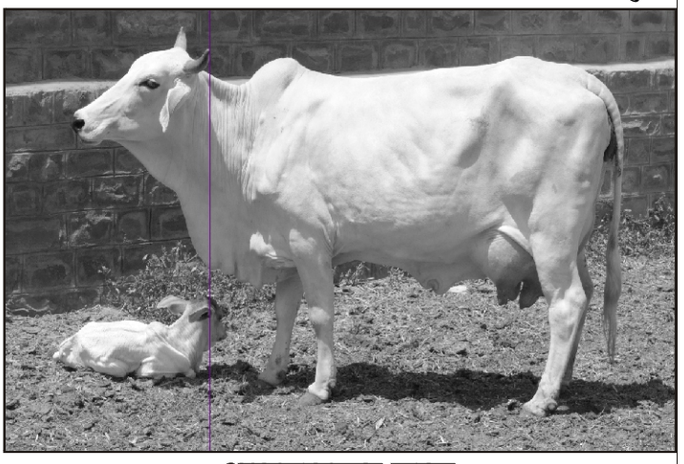

थारपारकर गाय

।। कोई व्यक्ति अपने कार्यो से महान होता है, अपने जन्म से नहीं ।।

विश्वविद्यालय में अनूठे पारंपरिक ईलाज और वैकल्पिक औषधि केन्द्र तथा भेषज और विष विज्ञान के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने राज्य में अपनी किस्म के पहले इथ्नों वेटरनरी प्रेक्टिसेज और वैकल्पिक औषधि केन्द्र के नए भवन का उद्घाटन किया। प्रो. गहलोत ने विश्वविद्यालय के भेषज और विष विज्ञान विभाग की नवनिर्मित प्रयोगशाला और भवन का भी शुभारंभ किया। राज्य सरकार द्वारा राजस्थान कृषि विकास योजना मद में स्वीकृत राशि से नए भवनों का निर्माण किया गया है। इस प्रयोगशाला में दवाईयों के उपयोग की विधियों उनके प्रभाव और उपचार के तौर–तरीकों का अध्ययन किया जाता है। कुलपति प्रो. गहलोत ने कहा कि वेटरनरी विश्वविद्यालय की नई पहल से राज्य में पारम्पारिक पशु चिकित्सा पद्वतियों का उपयोग करके कम लागत की उपचार विधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। इस केन्द्र में पुरातन पशु चिकित्सा विधियों की वैज्ञानिक व्याख्या की जा सकेगी। प्राचीन काल में हाथी, घोड़े, खच्चर और ऊँट आदि पशुओं का उपयोग युद्ध में होता रहा और उनके उपचार की पारंपारिक विधियों भी प्रचलित थी। इनके लिखित और मौखिक विवरणों को वैज्ञानिक परीक्षण के उपरांत प्रचलित करने की जरूरत है। विश्वविद्यालय इन कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए कार्य करेगा। देश में पाई जाने वाली विभिन्न वनस्पति की प्रजातियों में अद्भुत औषधीय क्षमताएं और गुण है। वेदों में भी इसका उल्लेख है। ऐसे पौधों के औषधीय गुणों की पहचान कर पुरातन चिकित्सा विधियों का उपयोग पशु स्वास्थ्य और उत्पादन बढ़ाने में किया जा सकता है। सस्ती चिकित्सा पद्वतियों और मंहगी दवाइयों के विकल्प तैयार करने में यह केन्द्र अपनी भूमिका अदा करेगा। औषधीय पेड़–पौधों का उपयोग पशुधन स्वास्थ्य और उत्पादन के कार्यों में किए जाने की संभावनाएं प्रबल है, इसमें भी वेटनरी संस्थान कार्य कर सकते है। इस कार्य में पशु चिकित्सालयों तथा अनुसंधान संस्थानों में पेड़–पौधों की रोग उपचार क्षमताओं और घटकों का पशुओं के संदर्भ में सत्यापन किया जाना शामिल है। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक प्रो. ए.पी. सिंह ने प्रयोगशाला में स्थापित उपकरणों की जानकारी दी। कुलपति ने प्रो. नलिनी कटारिया द्वारा तैयार "प्रेक्टिकल मैन्यूल" पुस्तिका का विमोचन भी किया।

लकवाग्रस्त श्वान का ईलाज

80 फीट का ट्रेविस (अड़गड़ा)

अड़गड़ा

पशुओं के लिए रिक्शा- प्राथमिक उपचार

राज्य का पहला पशुपालन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र शुरू

बीकानेर। वेटरनरी विश्वविद्यालय में राज्य के पहले पशुपालन अभियांत्रिकी एवं प्रौद्योगिकी केन्द्र का उद्घाटन वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने किया। राज्य सरकार द्वारा प्लान मद में स्वीकृत बजट से भवन, अत्याधुनिक प्रयोगशाला, कार्यशाला और कर्मकारों के लिए शैडस सहित अभियांत्रिकी उपकरणों से इसकी शुरूआत की गई। प्रो. गहलोत ने बताया कि पशुधन के विकास में अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी के उपयोग आधारित अनुसंधान कार्य तथा पशुपालकों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए नई मशीनों की डिजाईन तथा तकनीक का विकास करना इसका प्रमुख उद्देश्य होगा। केन्द्र इस क्षेत्र में लोगों को प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने का भी प्रयास करेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गांवों में पशुओं के ईलाज और टीकाकरण के लिए काम आने वाले ट्रेविस (अड़गडे) व अन्य उपकरण विकसित किए जा रहे है। वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर में 80 फुट लम्बा ट्रेविस डिजाईन कर लगाया गया है। ऊँटो व घोड़ों की चिकित्सा के लिए अलग प्रकार के ट्रेविस का डिजाईन एवं निर्माण वेटरनरी विश्वविद्यालय ने किया है। विश्वविद्यालय के एमु प्रजनन केन्द्र में अण्डों को सुरक्षित रखने के लिए बडें स्तर की 'हैचरी' भी बनाई जा रही है। पशु खाद्य उत्पादों के प्रसंस्करण कार्यों में अभियांत्रिकी का महत्वपूर्ण योगदान है तथा विश्वविद्यालय की इस दिशा में कार्य योजना प्रस्तावित है। कुलपति ने बताया कि इस केन्द्र में आगामी एक वर्ष में एक करोड़ रूपये राशि की मशीनें और लगाई जाएगी जिससे यह केन्द्र पशुपालन के सुदृढ़ीकरण कार्यों में मील का पत्थर साबित होगा।

अभियांत्रिकी केन्द्र की मशीन

अभियांत्रिकी केन्द्र की मशीन

सफलता की कहानी

पशुपालन से नबी के सपने पूरे हुए

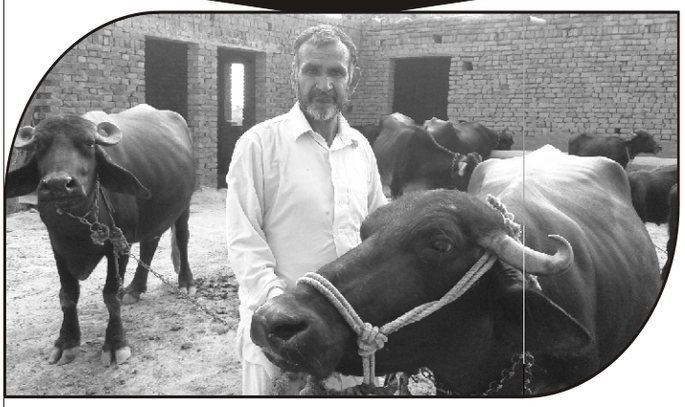

हर व्यक्ति अपनी और परिवार की सुख - समृद्धि चाहता है। सपनों को साकार करने के लिए दूर दृष्टि के साथ - साथ आर्थिक तंगी से उभरना भी जरूरी होता है। पशुधन के सहारे परिवार की विपन्नता को दूर करके नोहर (हनुमानगढ़) के किसान - पशुपालक गुलामनबी खान ने परिवार को आर्थिक संबल देने में कामयाबी पाई। खान ने पारंपरिक खेती के साथ - साथ ही पशुधन को बढ़ावा देकर गाय, भैंस, ऊँट, बकरी और भेड़पालन से अपनी आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाया। नोहर की सिंचाई कॉलोनी में रहने वाले खान पर परिवार की जिम्मेदारी आने पर 12 बीघा खेती की जमीन से होने वाली उपज से घर चलना मुश्किल हो गया। बड़े परिवार का गुजारा और बेटियों की शादी की चिंता भी सताती जा रही थी। पशुओं के प्रति बचपन से अपने लगाव के कारण खान ने अपने पशुधन को बढ़ाने का फैसला लिया। पशुधन में इजाफा करने के साथ ही पारंपरिक खेती में भी सुधार करते हुए पशुओं के लिए निरंतर और सालभर मिलने वाली चारा फसलों को लिया। वर्तमान में उसके पास 10 गाय-भैंस है जिससे प्रतिदिन 20-25 लीटर दूध का उत्पादन करके फैट के आधार पर डेयरी को विपणन करके सालाना 50 से 60 हजार रूपये की आमदनी ले रहे है। उसके पास 40 भेड़ों का टोला और 10 बकरियां है। जिससे 30 से 40 हजार की आय हो रही है। ऊन व बकरों की बिक्री हनुमानगढ़ के बाजार में करते है। अच्छा बाजार उपलब्ध होने पर आमदनी बढ़ सकती है।

गुलाम नबी नोहर में वेटरनरी विश्वविद्यालय के पहले कृषि विज्ञान केन्द्र का भी भरपूर फायदा उठा रहे है। केन्द्र के विशेषज्ञों से निरंतर संपर्क बनाए रखकर अपने पशुओं में टीकाकरण, पोषण, प्रबंधन, प्रजनन, संबंधी सलाह से काम करते है और दवा इत्यादि का फायदा लेते है। नबी की गिनती एक प्रगतिशील पशुपालक के रूप में भी होने लगी है जो अब अपने परिवार का आराम से गुजर - बसर करने में सक्षम हो गया है।

निदेशक की कलम से...

प्रिय पशुपालक भाइयों,

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन नए आयाम मासिक पत्रिका के प्रथम अंक का विमोचन माननीय कुलपति महोदय द्वारा करने के बाद अब आपको यह पत्रिका प्रतिमाह मिलती रहेगी। आप द्वारा पशुपालन क्षेत्र में कोई नवाचार या महत्वपूर्ण अनुभव हो तो हमें लिख भेजिए। उपयुक्त पाए जाने पर ऐसी सामग्री का उपयोग किया जा सकेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय का ध्येय है कि गांव ढ़ाणी तक बैठे पशुपालक–किसान भाईयों तक अपनी पहुँच बने। कुलपति प्रो. (डॉ) कर्नल ए. के. गहलोत की इसी सोच का परिणाम है कि राज्य के हर जिले में वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र (वी.यू.टी.आर.सी.) स्थापित किये जाए। इस वर्ष 10 जिलों में ऐसे केन्द्र स्थापित करने का लक्ष्य है। हमें यह बताते हुए खुशी है कि राज्य में पहला ऐसा केन्द्र नागौर जिले के बाकलिया गांव में शीघ्र ही बनकर तैयार हो जाएगा। राज्य सरकार ने कुम्हेर (भरतपुर) में पशुपालन विभाग के प्रजनन फार्म के पीछे 58X74 मीटर भूमि और चित्तौड़गढ़ जिले में बोजुन्दा फार्म पर 120.46 हैक्टेयर भूमि वी.यू.टी.आर.सी. के लिए आवंटित कर दी है। श्री गंगानगर जिले के सूरतगढ़ में पूर्व भेड़ फार्म के कृत्रिम प्रवास केन्द्र की 13791.66 वर्ग गज भूमि का आवंटन कर दिया है। यहां शीघ्र ही विश्वविद्यालय केन्दों का निर्माण शुरू कर देगा। इन केन्द्रों के शुरू हो जाने से पशुपालन की नई तकनीक जानकारी जिले के गांव ढ़ाणी तक पहुँचा करेंगी। विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों एवं चिकित्सकों, विशेषज्ञों का सीधा संवाद पशुपालकों से हो सकेगा। स्थानीय स्तर की पशुपालन की विशिष्ट समस्याओं को चिन्हित करके केन्द्र के मार्फत परियोजनाएँ तैयार की जाएगी। इन केन्द्रों से पशुपालन, पशुरोग निदान, उपचार, पशुआहार, के साथ – साथ पशु उत्पादन की गुणवत्ता के परिरक्षण के लिए नई तकनीकी को अपनाए जाने के लिए विशेष सेवाएँ दी जा सकेगी। पशुपालकों के प्रशिक्षण और जागरूकता के लिए कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकेगा।

प्रो. (डॉ.) चन्द्रेश कुमार मुरड़िया
प्रसार शिक्षा निदेशक

नवाचार - समाचार भेज सकते हैं

पशुपालक भाईयों एवं पशुचिकित्सा व्यवसाय से जुड़े बंधुओं से अनुरोध है कि पशुपालन के क्षेत्र में कोई नवाचार - समाचार हो तो फोटोग्राफ सहित भिजवा सकते हैं। उपयुक्त पाए जाने पर प्रकाशित किया जाएगा - संपादक

प्रधान संपादक
प्रो. सी. के. मुरड़िया
●
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
●
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
●
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505

भारत सरकार की सेवार्थ बुक पोस्ट

सेवामें

.....

.....

.....

संपादक, प्रकाशक और मुद्रक सी. के. मुरड़िया के लिए प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर से प्रकाशित और डायमंड प्रिंटर्स एण्ड स्टेशनरी नत्थूसर गेट बीकानेर से मुद्रित